रिकॉर्ड :– बचपन के दिन भुला न देना..... ॐ पिताश्री 28/6/64

ओम् शान्ति। बच्चों ने मीठा–2 गीत सुना। बेहद का बाप बच्चों प्रति समझा रहे हैं। परमपिता परमात्मा उसको ही कहा जाता है श्री–2 माने श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ शिवभगवानुवाच्य अथवा रुद्र भगवानुवाच्य। रुद्र प०पि०प० को ही कहा जाता है। तो प०पि०प० इस शरीर द्वारा अपने बच्चों, आत्माओं को समझाय रहे हैं। ऐसे और कोई मनुष्य, साधु–संत आदि नहीं कहेंगे कि तुम आत्मा हो, तुम्हारा प०पि०प० इस मुख कमल से बोल रहे हैं। कहते हैं गऊमुख। अब पानी की तो कोई बात नहीं। बाप है ज्ञान का सागर। श्री–श्री 108 रुद्रमाला व शिवमाला है ना। तो पहले यह पक्का निश्चय करो कि बाबा हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। आत्मा ही संस्कार ले जाती है, आत्मा ही पढ़ती है ऑरगन्स द्वारा। आत्मा खुद कहती है, मैं एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ भिन्न नाम–रूप, देश–काल। सतयुग में पुनर्जन्म लेता हूँ तो नाम–रूप बदल जाता है। यह आत्मा बोलती है। सतयुग में हूँ तो पुनर्जन्म सतयुग में लेता हूँ अथवा बाप समझाते हैं, तुम स्वर्ग में हो तो पुनर्जन्म वहाँ लेते हो, फिर नाम–रूप बदलता जाता है। यह निराकार शिवबाबा इस रथ में आए समझा रहे हैं– बच्चे, अब तुम हमारे बच्चे बने हो। तुमको बहुत खुशी चढ़ी हुई है, हम बेहद के बाप से वर्सा लेते हैं इस ब्रह्मा द्वारा। आत्मा कहती है मैं इस शरीर द्वारा बैरिस्टरी का अथवा वांढे का पार्ट बजाता हूँ। हम आत्मा नंगी थीं, फिर गर्भ में आए शरीर धारण किया है। बाप कहते हैं, मैं तो गर्भ में नहीं आता हूँ। हम ऐसे नहीं कहेंगे कि मैं प०पि०प० एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। नहीं, तुम लेते हो, यह (दादा) लेता है। इस आत्मा ने 84 जन्म पूरे किए हैं। यह आत्मा अपने जन्मों को नहीं जानती थी, अभी 84 जन्मों को जाना है। आत्मा ही कहती है मैंने सूर्यवंशी घराने में जन्म लिया, फिर पुनर्जन्म लेते आए, फिर चन्द्रवंशी घराने में जन्म लिया, पुनर्जन्म लेते–2 सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलियुग में आए। आत्मा कहती है द्वापर में हमने बाप को बहुत याद किया। प०पि०प० के लिंग रूप की पूजा भी की। मैं आत्मा सतयुग में मालिक थी, वहाँ किसकी पूजा नहीं करती थी। स्वर्ग में भक्ति होती नहीं। आधा कल्प भक्ति की, अब फिर बाप की गोद में आए हैं। अभी तुम सब निराकार की गोद में आए हो साकार द्वारा। बाप कहते हैं यह ईश्वरीय जन्म भूल न जाना। कहते हैं– बाबा, यह तो बड़ा मुश्किल है। अरे, मश्किल क्या बात है! तुम आत्माओं का मैं बाप हूँ। आया हूँ तुमको पतित से पावन बनाने। तुम स्वर्ग की बादशाही प्राप्त करने पढ़ते हो। मैं तुम आत्माओं को राजयोग सिखाता हूँ। तुम इन कानों से सुनते हो, धारणा करते हो। ज्ञान के संस्कार मुझ प०पि०प० में भी हैं; इसलिए मुझे ज्ञानसागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप कहते हैं। खुद कहते हैं, बरोबर मैं रचता हूँ, मैं परमधाम में रहता हूँ। मैं यहाँ एक ही बार आता हूँ जबकि मुझे पढ़ाना होता है। पतित सृष्टि को आए पावन बनाता हूँ। ज़रूर पतित ही याद करेंगे। सतयुग में पावन तो याद नहीं करेंगे ना। ऐसे तो कोई नहीं कहेंगे, हम आत्माओं को पतित बनाओ। नहीं, पतित माया ने बनाया है तब कहते हैं पावन बनाओ; परन्तु उन्हों को यह पता न है कि मैं कब आता हूँ। मैं आता ही हूँ संगम पर, और कोई समय नहीं आता हूँ, अभी आया हूँ। तुम मीठे–2 बच्चों ने हमारी गोद ली है। जानते हो, बाबा फिर वह ही प्राचीन योग सिखाते हैं, जिससे भारत पावन बना था। यह है निराकार ईश्वर की गोद। निराकार बाबा कहते हैं, मैं इस तन में आता हूँ। यह (ब्रह्मा) तुम्हारी बड़ी मम्मा है। वह मम्मा सरस्वती जगदम्बा, ब्रह्मा की बेटी है; परन्तु यह बड़ी मम्मा पालना तो नहीं कर सकती; इसलिए वह जगदम्बा मुकर्रर रखी है। इसके (ब्रह्मा के) शरीर को जगदम्बा नहीं कहेंगे। यह मात–पिता हैं। इन द्वारा तुम गोद लेते हो। शिवबाबा कहते हैं, जब भी इनकी गोद में आएँ तो याद हमेशा शिवबाबा को करो। शिवबाबा को भूलकर इनकी गोद में आएँ तो पापात्मा बने। हम शिवबाबा की गोद में जाते हैं। यह (ब्रह्मा) माता है। वर्सा माता से नहीं मिल सकता। वर्सा फिर भी बाप से मिलेगा। इस ब्रह्मा माता की तुम मुखवंशावली। बाप कहते हैं– बच्चे, मेरा बनकर स्वर्ग की बादशाही लेने लिए पुरुषार्थ करते–2 फिर कहाँ माया की युद्ध में

हार न जाना, भाग न जाना। यह ईश्वरीय बचपन भुलाना नहीं। अगर भुलाया तो रोना पड़ेगा। तो बी.के.सरस्वती, जिसको जगदम्बा कहते हैं, वह पालना करने निमित्त बनी हुई है। यह पालना कैसे कर सके! ..... पहले–2 इनको मिलता है। पहले इनके कान सुनते हैं, फिर जगदम्बा है संभाल लिए। अब कहते हैं, मैं संगमयुग पर आया हूँ तुमको वापिस ले जाने। जैसे धर्माऊ मास, जिसको पुरुषोत्तम मास कहते हैं ना, वैसे यह भी है पुरुषोत्तम युग। यहाँ उत्तम ते उत्तम पुरुष बनना होता है। पुरुषोत्तम माने उत्तम ते पुरुष कौन है? यह श्री नारायण। यह नर–नारी ऊँच ते ऊँच कैसे और किस द्वारा बने? बाप कहते हैं मेरे द्वारा। मेरा नाम भी है– श्री–2, श्रेष्ठ से श्रेष्ठ। ऐसा श्री नारायण जैसा मनुष्य को बनाता हूँ, आकर पतितों को पावन बनाता हूँ, जिससे ऐसे (ल०ना०) पुरुषोत्तम और पुरुषोत्तमी बनते हैं। बाप कहते हैं, देह सहित, देह के जो भी संबंध हैं, सबको भूलते जाओ। मुझ एक के साथ योग लगाओ। तुम कहते हो, हम बाप के बच्चे बने हैं, बाप के स्थापन किए हुए स्वर्ग के हम मालिक बनते हैं। बाप कहते हैं, मामेकम् याद करो। यह आत्मा की अथवा बुद्धि की यात्रा। धारणा सब आत्मा को ही करनी है। शरीर तो जड़ है। आत्मा की प्रवेशता से यह चेतन बनता है। मनुष्य पितर आदि खिलाते हैं (ब्राह्म)णों को। समझो, बाप की आत्मा को बुलाते हैं, कहते हैं वे वासना ले जावेंगे। कोई स्त्री को बुलाते हैं तो ब्राह्मण के तन में आत्मा आती है। समझते हैं, ब्राह्मण के तन में स्त्री की आत्मा आई है। साहुकार लोग होते हैं तो मोह वश दान भी करते हैं, हीरे की फुली बनाए पहनाते हैं। फुली तो ब्राह्मण ही पहनेंगे; परन्तु ये दान करते हैं कि उनको पहुँचे। यह ब्राह्मण आदि खिलाने का रिवाज़ भारत में है। आत्मा आकर बोलती है। उनसे पूछते हैं, फलानी चीज़ कहाँ रखी है? नारायण सर शहर में खास बुलाते थे। अभी वह ताकत न रही है, तो रसम–रिवाज़ भी बन्द हो गए हैं। आगे बतलाते थे। छोटा बच्चा तो सुनाए न सके; इसलिए बड़े के तन में बुलाते हैं। तो बाप समझाते हैं– लाडले बच्चे, यह याद की मंजिल बड़ी लम्बी है। तीर्थों पर तो लोग चक्र लगाए लौट आते हैं। तीर्थों पर कब विकार में नहीं जाते। क्रोध, लोभ, मोह आदि हो जाए; परन्तु पवित्र ज़रूर रहेंगे। फिर घर में लौट आते हैं तो अपवित्र बन पड़ते हैं। इस समय सबकी आत्मा भी झूठी तो शरीर भी झूठे हैं। ल०ना० की राजधानी से लेकर, जो भी आत्माएँ आती हैं, इस समय सब पतित हैं। सतयुग में बेहद का सुख, शांति, पवित्रता रहती है। कलियुग में तीनों नहीं हैं, घर–2 में दुख–अशांति है। कोई–2 घर में तो इतनी अशांति होती है जैसा नरक। आपस में बहुत लड़ते–झगड़ते हैं। तो बाप कहते हैं यह बचपन भूलना नहीं। अगर भूले तो ऊँच ते ऊँच वर्सा गँवा देंगे। भुला दिया, फारकती दे दी तो अधम गति को पावेंगे। स्वर्ग में आवेंगे, गरीब चंडाल वा साहुकारों के चण्डाल बनेंगे। अगर श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ श्री ल०ना० बनेंगे। सीता–राम त्रेता में आ जाते। दो कला कम हो गई; इसलिए इसको क्षत्रिय पन की निशानी दी है। ऐसे नहीं, वहाँ कोई राम–रावण की लड़ाई लगी। यह क्षत्रिय वर्ण में चला जाता। जो माया पर जीत पहनते हैं वो देवता वर्ण में जाते हैं और जो माया पर जीत न पहन सकेंगे, नापास होंगे, तो उनको क्षत्रिय कहेंगे, राम–सीता के घराने में चला जावेगा। पूरी मार्क्स है 100। सूर्यवंशी नं०वन जो गद्दी पर बैठेंगे। नं०टू मार्क्स से कम हो गया, 33 मार्क्स के नीचे आ जाते हैं तो राज्य पीछे मिलता है। सूर्यवंशियों का पूरा हो फिर चंद्रवंशियों का चलता है। सूर्यवंशी फिर चंद्रवंशी बन जाते हैं। सूर्यवंशी राजधानी पास्ट हो गई। ड्रामा को भी समझना है। सतयुग के बाद त्रेता। सतोप्रधान से सतो हो जाती है, खाद पड़ती जाती है– पहले गोल्डन, फिर सिलवर, कॉपर....। अब तुम्हारी आत्मा में भी खाद पड़ी हुई है। आत्मा की ज्योत उझानी हुई है। पत्थरबुद्धि बन पड़े हैं। बाप फिर पारसनाथ बनाते हैं। कहते हैं– हे आत्मा, चलते–फिरते, कोई भी कार्य करते, बाप को याद करो। 8 घंटा तो पाण्डव गवर्मेन्ट की सर्विस करोगे ना? क्योंकि तुम्हारी याद से दुनिया प्योर होती जावेगी। तुम पतित सृष्टि को प्योर बनाने मदद करते हो।

अभी तुम आसुरी गोद से ईश्वरीय गोद में आए हो। फिर अगर आसुरी गोद में गए अथवा उनको याद किया तो विकर्म विनाश न होंगे। मेहनत सारी इसमें है, नहीं तो अंत में बहुत रोना, पछताना पड़ेगा। जैसे स्कूल में अच्छी रीत पढ़ते हैं तो ऊँच पद पाते हैं, कोई नापास हो पड़ते हैं तो आपघात कर लेते हैं। तुम भी पिछाड़ी में बहुत रोएँगे। सज़ा भी खावेंगे। पापों का बोझा रह जाता है तो फिर तुम्हारे लिए ट्रिब्युनल बैठती है। सा० कराते हैं तुमने फलाने जन्म में यह (कि)या। काशी कलवट में भी सा० कराते, सज़ा देते हैं। यहाँ भी सा० कराए धर्मराज कहेंगे– देखो, बाप तुमको इस ब्रह्मा तन से पढ़ाता था, तुमको इतना सिखलाया, फिर भी तुमने ये–2 पाप किए। न सिर्फ इस जन्म के; परन्तु जन्म–जन्मांतर के पापों का सा० करावेंगे। टाइम इतना लगता है जैसे कि बहुत जन्म सज़ा खा रहा हूँ। फिर बहुत पछतावेंगे, रोएँगे; परन्तु हो क्या सकेगा! इसलिए पहले से बतला देते हैं– नाम बदनाम किया तो बहुत सज़ा खावेंगे। इसलिए बच्चे, मुझ अपने सद्गुरु के निन्दक न बनना, नहीं तो सज़ाए भी खावेंगे और पद भी भ्रष्ट होगा। मनुष्यों ने फिर उन कलियुगी गुरुओं के लिए समझ लिया है– गुरु का निन्दक ठौर न पाए; परन्तु कौन–सी ठौर? कुछ भी नहीं जानते। ठौर तो अभी पाना होता है। सत् बाप, सत् टीचर, सत् गुरु तो एक ही है। अब बाप कहते हैं– बच्चे, याद रखना, यह तुम्हारा जीवन भी वहाँ तक है जहाँ तक यह (ब्रह्मा का) शरीर है। 100 वर्ष बाद यह नष्ट हो जाता है, विनाश को पाता है। यह भी नॉलेज अभी सीख रहे हैं। बाप कहते हैं, यह बच्चा हमको बहुत याद करते हैं, ज्ञान भी धारण करते हैं। यह और मम्मा नं०वन में पास फिर ल०ना० बनते हैं। इनकी भी डिनायस्टी बनती है। सब पुरुषार्थ करते हैं, हम भी मम्मा–बाबा मिसल मेहनत कर इनके तख्त के मालिक बनें, मात–पिता को फॉलो करें और भविष्य तख्तनशीन बनें। यह रचता और रचना का नॉलेज और कोई जान नहीं सकता। वे तो बेअंत कह देते हैं, हम नहीं जानते, तो नास्तिक हो गए। यह है ही नास्तिकों की दुनिया। नास्तिक निधण को कहा जाता, जो अपने धनी को नहीं जानते। न जानने कारण भारतवासी अथवा सब बच्चे दुखी हुए हैं। लड़ते–झगड़ते रहते हैं पानी के लिए, जमीन के लिए। सब निधणके, नास्तिक हैं। भल कितना भी बड़ा विद्वान हो, वह भी नास्तिक है; क्योंकि कहते हैं– ईश्वर सर्वव्यापी है। ये सब पाप करते हैं, पाप आत्मा हैं। सबसे बड़े पापात्मा हैं ये लौकिक गुरु। सत्गुरु तारे, पावन बनावे। पतित बनाने वाली है माया। माया की मत पर चलने वाले कलियुगी गुरु हैं। गंगा स्नान जाकर करते हैं। इसको पतित–पावनी कहते हैं। सब पतित लोग जाते हैं पाप धोने। हैं तो सब पानी की नदियाँ, वो तो पावन कर न सके। गंगा कैसे शिक्षा देगी? इसलिए बाप कहते हैं, ये गुरुलोग भी पतित हैं। आत्मा को निर्लेप कहना, यह रॉंग है। संस्कार सब आत्मा में रहते हैं। कहा भी जाता है– यह पास्ट जन्मों के कर्मों का फल है। अभी बाप से तुम ऐसे कर्म सीखते हो, जो 21 जन्म तुमको कब कर्म कूटना न पड़ेंगे। एकदम कर्मातीत अवस्था में पहुँचाए देते हैं। भगवानुवाच्य– हे बच्चे, मुझ बाप अथवा साजन के बन कब फारकती न देना। फारकती देने का कब संकल्प भी न आना चाहिए। वहाँ कब स्त्री को, पति को डायवोर्स देने का संकल्प न आवेगा। बच्चा कब बाप को फारकती न देगा। आजकल तो बहुत देते हैं। सतयुग में कब फारकती नहीं देते; क्योंकि वहाँ तुम अभी के पुरुषार्थ की प्रालब्ध भोगते हो। इसलिए कोई दुख अथवा फारकती का प्रश्न ही नहीं। यह है आत्मा की यात्रा प०पि०प० के पास जाने लिए। निराकार बाबा निराकार आत्माओं से बात करते हैं इस मुख द्वारा। तो यह गऊमुख हुआ ना! बड़ी माँ है। तुम हो मुखवंशावली। इनसे ज्ञान रत्न निकलते हैं। बाकी गऊ के मुख से जल कैसे निकलेगा! बाबा इस मुख द्वारा अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं। एक–2 रत्न लाखों रुपये का है, जितना तुम धारण करेंगे। मुख्य बात है ही मनमनाभव। यह एक रत्न ही मुख्य है। बेहद का बाप कहते हैं, मुझे याद करने से मैं बेहद का वर्सा देने

बाँधा हुआ हूँ। जब तक इनका शरीर है मुझे याद करते रहो, तो तुमको स्वर्ग की बादशाही देंगे; क्योंकि तुम आज्ञाकारी, वफादार बनते हो। जितना जो याद में रहते हैं इतना दुनिया को पवित्र बनाते हैं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। (R) माया भुलाए देती है; इसलिए खबरदार करते हैं– कब बाप को भुला न देना। मैं तुमको लेने लिए आया हूँ। नाटक सतयुग से लेकर फिर रिपीट होगा। मैं सतयुग का मालिक नहीं बनूँगा, तुमको सतयुग की राजाई देता हूँ। मैं फिर आधा कल्प निर्वाण में बैठ जाऊँगा। फिर आधा कल्प मुझे कोई याद नहीं करते। दुख में सब याद करते हैं। कहते हैं– अरे, भगवान ने हमारे बच्चे को ले लिया, बड़ा जुल्म किया। अब बाप कोई थोड़े ही जुल्म करता है। बाप कहते हैं– मैं कब दुख नहीं देता हूँ। दुख माया देती है। मेरे राज्य में तो कब अकाले मृत्यु होता नहीं, न इतने बच्चे होते हैं। वहाँ होता ही है एक बच्चा। बाद में दो होते हैं। लव और कुश दिखाते हैं। यह है निशानी। बाकी कोई दब आदि से पैदा नहीं होते। योगबल तो मशहूर है। तो बाप कहते हैं, मुझे याद करो तो याद से विकर्म विनाश होंगे। और कोई उपाय पावन बनने का है नहीं। सज़ाए खाकर सब हिसाब–किताब चुक्तू करेंगे। (R) हँसते–गाते रहते हैं ना। बाप मिला बाकी क्या चाहिए! गरीब को अथवा साहुकार को बाप मिला, बस, उनको याद करना है। आत्मा ही कहती है, मैं इस समय गरीब हूँ, मैं साहुकार हूँ। बाप कहते हैं– गरीब हो अथवा साहुकार हो, मुझे याद करो। गरीब दुखी होते हैं तो याद करते हैं। साहुकारों को सुख का नशा होने कारण याद न करते हैं। इसलिए गरीब–निवाज़ कहते हैं। सबसे गरीब तो हैं कन्याएँ। इनको वर्सा मिलता नहीं। हाफ पार्टनर भी नहीं है। इसलिए अब माताओं को आगे करते हैं। तुमको सबका उद्धार करना है। यह यात्रा लम्बी है– जां जीना है वहाँ बाप का हो रहना है। अपना चार्ट रखो– कितना समय हम योग में रहे। 8 घंटा हो ज़रूर याद करना है। वह ही पास विद ऑनर्स होंगे। ऐसे याद कर(ने) से ही माला अथवा राजधानी बनती है। पावन बनते–2 फिर पतित बना तो गिरा, खलास। यात्रा पर हो ना। (बड़ा) लम्बा चक्कर है। विकार में गए तो खाना खराब हुआ। या तो सूर्यवंशी घराने में ऊँच पद या तो एकदम प्रजा में जाए पड़ेगा। अच्छा, मात–पिता का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ओम् शांति।